(11) वस्तु की पूर्ति — वस्तु की पूर्ति उत्पादक द्वारा की जाती है। वस्तु की पूर्ति से आशय बाजार पूर्ति से है। बाजार पूर्ति से तात्पर्य किसी वस्तु की पूर्ति के उस कुल जोड़ से है जो बाजार में सभी फर्में बेचने के लिए तैयार है। विक्रेता द्वारा वस्तु की पूर्ति इसलिए की जाती है क्योंकि वस्तु के विक्रय से उन्हें लाभ प्राप्त होता है। प्रत्येक उत्पादक वस्तु की कीमत इसलिए लेता है कि वस्तु के उत्पादन में उसे कुछ न कुछ व्यय करना पड़ता है। वस्तु की पूर्ति विक्रेताओं द्वारा की जाती है विक्रेताओं के लिए कीमत प्राप्त करने की एक न्यूनतम सीमा होती है यह न्यूनतम सीमा वस्तु के उत्पादन लागत द्वारा तय होती है। विक्रेता उस समय तक वस्तु की बिक्री को घटाते रहेंगे जब तक कीमत सीमान्त लागत के बराबर नहीं हो जाती है। किसी वस्तु की पूर्ति पूर्ति के नियम द्वारा नियंत्रित होती है। ऊँची कीमत पर उत्पादक अधिक पूर्ति करते हैं और कम कीमत पर कम वस्तु की पूर्ति की जाती है। इसे एक चित्र में बताया जा सकता है। चित्र में SS वस्तु की पूर्ति रेखा है। जब वस्तु की कीमत OP_1 है तब उत्पादक OQ_1 मात्रा की पूर्ति करते हैं। जब कीमत बढ़कर OP_2 हो जाती है तब वस्तु की पूर्ति भी बढ़कर OQ_2 हो जाती है। कीमत एवं पूर्ति में सीधा सम्बन्ध होने के कारण ही

पूर्ति वक्र बायें से दायें ऊपर की ओर बढ़ता जाता है इस चित्र में OY पर कीमत और OX पर वस्तु की पूर्ति को दर्शाया गया है।

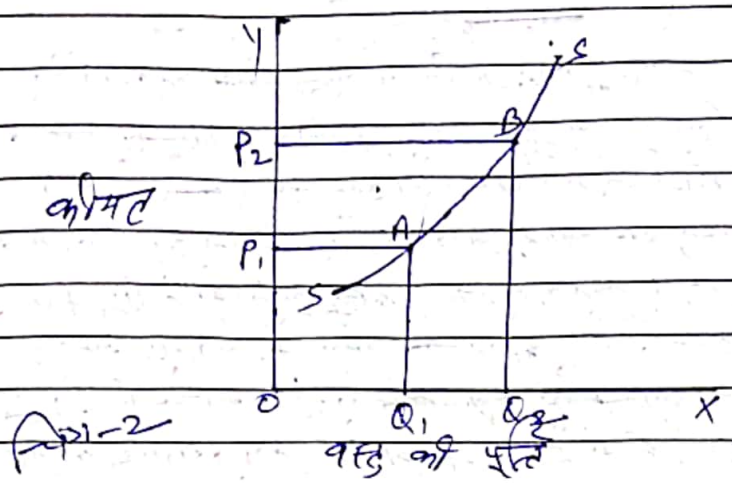

कीमत

चित्र-2

वस्तु की पूर्ति

चित्र-2

कीमत का निर्धारण :- मांग एवं पूर्ति में संतुलन

बाजार में क्रेता की मांग शक्ति और विक्रेता की पूर्ति शक्ति परस्पर विपरित दिशा में काम करती है, क्रेता वस्तु के लिए कम से कम कीमत देना चाहता है जबकि विक्रेता वस्तु के लिए अधिक कीमत लेना चाहता है। दोनों पक्षों को मान्य संतुलन कीमत का निर्धारण उस बिन्दु पर होता है जहाँ वस्तु की मांग और वस्तु की पूर्ति आपस में बराबर होते हैं।

सैम्युलसन के शब्दों में "संतुलन कीमत ही वह कीमत होती है जिस पर स्वेच्छा से की गई पूर्ति और स्वेच्छा से की गई मांग बराबर होती है और केवल यही स्थायी रह सकती है। प्रतियोगी सन्तुलन मांग एवं पूर्ति वक्रों के कटाव बिन्दु पर होना चाहिए"।

इस प्रकार मांग और पूर्ति सन्तुलन बिन्दु ही कीमत को निर्धारित करता है।

मांग एवं पूर्ति के साम्य को एक चित्र की सहायता से अच्छा स्पष्ट किया जा सकता है। चित्र में DD मांग की रेखा है और SS पूर्ति की रेखा है। OX अक्ष पर वस्तु की मात्रा एवं OY पर कीमत को दर्शाया गया है। इन दोनों वक्रों का सन्तुलन बिन्दु E है जहाँ पर वस्तु की कीमत OP3 होगी। OP से कीमत बढ़कर OP2 करने पर पूर्ति मांग की तुलना में अधिक हो जाती है। अतः वस्तु बेचने के लिए विक्रेताओं की प्रतिस्पर्धा

कीमत

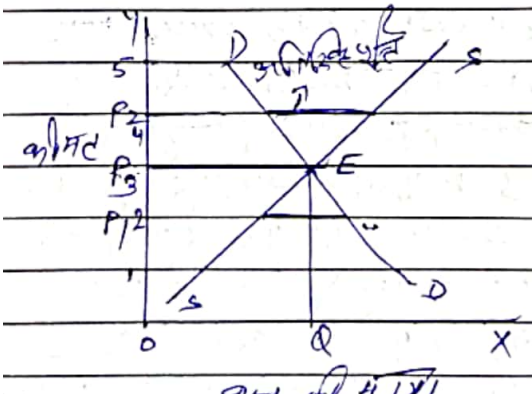

वस्तु की मात्रा

के कारण कीमत घटेगी। कीमत घटाकर OP_1 करने पर मांग पूर्ति से अधिक हो जाती है। इस दशा में क्रेताओं के बीच सीमित वस्तु मात्रा को प्राप्त करने के लिए प्रतिस्पर्धा होगी और कीमत में वृद्धि होगी।

इस से स्पष्ट है कि जिस बिन्दु पर मांग और पूर्ति बराबर हो जाती है उसे ही सन्तुलन बिन्दु कहा जाता है। यह सन्तुलन बिन्दु ही सन्तुलन कीमत का निर्धारण करता है। जिस कीमत पर वस्तु की मांगी गई मात्रा और पूर्ति की गई मात्रा बराबर हो जाती है उसे सन्तुलन कीमत कहा जाता है। सन्तुलन कीमत पर मांगी गई और पूर्ति की गई मात्रा को सन्तुलन मात्रा कहा जाता है।

कीमत निर्धारण में समय तत्व का महत्व

पूर्ण प्रतियोगिता में वस्तु की साम्य कीमत उस बिन्दु पर निर्धारित होती है जहां वस्तु की मांग वस्तु की पूर्ति के बराबर होती है। परन्तु एक वस्तु की कीमत पर मांग का अधिक प्रभाव पड़ता है या पूर्ति का यह समय अवधि पर निर्भर करता है। मार्शल के अनुसार समय जितना कम होगा कीमत पर उतना ही मांग का अधिक प्रभाव होगा और समय जितना अधिक होगा कीमत पर पूर्ति का उतना ही अधिक प्रभाव होगा।

मार्शल ने कीमत निर्धारण के नजरिया से समय को तीन भागों में बांटा है —

(i) अति अल्पकाल (ii) अल्पकाल (iii) दीर्घकाल।

(i) अति अल्पकाल — अति अल्पकाल में समय की अवधि इतनी कम होती है कि इसके अन्तर्गत पूर्ति में कोई परिवर्तन नहीं लाया जा सकता है (जैसे कुछ घण्टे, कुछ दिन इत्यादि) इसलिए कीमत निर्धारण में केवल मांग की भूमिका है। अति अल्पकालीन कीमत को बाजार कीमत कहते हैं इसे एक चित्र के द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं। चित्र में VSP अति अल्पकालीन पूर्ति वक्र है जो OY अक्ष के समानान्तर है जिसका अर्थ यह है कि कीमत में परिवर्तन का पूर्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। जब मांग DD है तो कीमत OP है परन्तु जब मांग बढ़कर D_2D_2 हो जाती है तो कीमत बढ़कर OP_2 हो जाती है और जब मांग कम होकर D_1D_1 हो जाती है तो कीमत कम होकर OP_1 हो जाती है। स्पष्ट है कि अति अल्पकाल में वस्तु की कीमत पर मांग का अधिक प्रभाव पड़ता है।